पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष :1, संख्या :1; जुलाई-दिसंबर, 2020

शोषण

मूल(खासी) : प्रो. स्ट्रीम्लेट ड्खार
अनुवाद : डॉ. जीन एस. ड्खार

तेरह वर्षीय, क्या तुम इतनी बड़ी हुई हो
कि अपनी आजीविका खुद कमा सको ?
कोई कहता है,
“अपनी कमाई से तुम मौज मना सकती
ग़रीबी एक इतिहास मात्र रह जाएगी ! ”
किन्तु वास्तविकता सत्य से दूर है
और तुम्हें ज्ञात नहीं
कि तुम्हें फुसलाया गया है I
तुम्हारी मासूमियत का शोषण हुआ है ;
श्रम करने हेतु बाध्य किया गया है ,
देह-व्यापार, यौन शोषण
और पूर्ण अपमान ;
अब तुम छोटी हो
जीवित मृत्यु की गुफ़ा में जीवन का सामना करने
हेतु
हाय ! दुर्गति से परिपूर्ण ;
उत्कंठा के घाव तुम्हारे हृदय को कुरेद रहे हैं
रक्त के आँसू उसकी नलिका को जकड़ रहे हैं ,
तुम नियति का परिणाम कैसे हो सकती हो ?
तुम झोपड़ी में पैदा क्यों हुई ?
कि बेहतर आश्रय खोजने की ज़रूरत आन पड़ी
तुम्हारी नियति का रचनाकार कौन है ?
कि तुम शोषण सहो ?
मैं अचंभित हूँ !
क्यों तुम्हारे प्रिय जन तुम्हारी चीख पर
बहरे और अंधे बने हुए हैं ?

संपर्क सूत्र:

प्रो. स्ट्रीम्लेट ड्खार
खासी विभाग
पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलाँग

डॉ. जीन एस. ड्खार
सहायक प्राध्यापिका
हिंदी विभाग
लेडी कीन कॉलेज,शिलाँग